

३.५.२८

राजरक्षितो मम

५९८ स्वा. १५



१७

॥ अथ रामरक्षामंत्रः ॥ श्रीराम ॥



(८)

श्री गणेशाय नमः॥ श्रीरामसिताय नमः॥
अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमंत्रस्य॥ बुधकोसि
श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीरामचंद्रो देवता॥ अननुष्टुप छ
दः॥ श्रीरामचंद्रो देवता॥ अपि विनयैर्गोः॥ च
रितं रघुनाथस्य दातृकोटिप्रविस्तरं॥ यकैकम
क्षरं पुंस्त्रीमाहापातमनवानं॥ १॥ व्याघ्रानिमो
हलं रामारामं नाडिवलीचनं॥ जानकिलक्ष्म
णो मया तं जटामुगुटमडितं॥ २॥ सासितुनयन
वाणपाणिनतचरातकं॥ स्यलितया जगज्ज

21
दुमाविरभूतमजं विभुं ॥३॥ रामरक्षां पठे प्राज्ञः
पापं विं सर्वकामदां ॥ शिरो मे राघः पादुभा कंदरा
रथामडाः ॥४॥ कोशले यो दशौ पादु विश्यामि
त्रे मयश्च ति ॥ घ्राणं पादु मरुन जाला मुखा सो
मित्रि वल्लत ॥५॥ जिह्वं विद्यानिधि पादु कं
ठं भरवा बंदितः ॥ स्कंदो दिव्यायुधौ पादु भुजो
भगेश कारमुंकीः ॥६॥ करौं किता पाति पाहृ
यं जामदग्नि यजिदा ॥ मध्यं पादु ववरं ध्वं सिना
मिजं बुदा भयः ॥७॥ सुग्रीव दशकटि पादुं स
विधनिहमन मभु ॥ उरुरधु वमः पादुरक्षक

(3)

विनाशकत् ॥८॥ जानुनी सूर्तेर पातु नेघेरीदे
(मुरवातकाः ॥ पादो विप्रिषण श्रीः द पातुरामो
दिवतं वपुः ॥९॥ एतां राम बां लोपेतां रक्षायः सु
रुपि पठेत् ॥ शायिरायुः सरिब पुत्रिविजयै वि
नयिभवेद् ॥१०॥ पातु लुप्त वज्रयो मचाणः छ
मचारिणः ॥ कदम्बमपि दीता स्ये रक्षितं नंवा
मनामभिः ॥११॥ रामे किराम नद्वे किराम च देवि
स्मरन् ॥ नरो न लिप्यते पापे मुक्ति मुक्ति च विदति
॥१२॥ जंगज्जैत्रकमत्रेण राम नाना निरक्षितं ॥
यः कठ धारयेत् स्य कस्या छरव सिधयाः ॥१३॥
॥ वज्र पंजरणामेदं यो राम कच हारेद् ॥ अ

श्रीरा

२

२

(3A)

व्याह ता श सर्वत्र लभते जय संग लं ॥१४॥ आदि
पुत्रान्यथा स्य न्ये रा म रक्षा मि मां ह रां तथा लिखित
वामा ताः प्रबु धो बु ध को सि कः ॥१५॥ अ राम क
न्य विरक्षां णां विना म स क तां प दं ॥ अ भि राम
त्रि लो कां नां रा म श्री मां गै जै प्र मु ॥१६॥ त रा णे
रूप संपन्नौ सु कु मा रौ मा हा बा लौ पु रु रि क वि
रा ता क्षौ चिर रा सा जि ज्ञा नां ब रौ ॥ फ ल मु ल क
नो दा तौ ता प सो व अ चार णै ॥१८॥ पु त्रौ द दार
थ स्ये तु क्ता रौ रा म क म णौ ॥ श रं ण्यौ स र्व स
हाना श्रो त्तौ स र्व ध नु म्पा तां र क्ष कु ल नि ह ता रौ क

त्रायतान्नोरघुतमै॥१७॥ अतसउज्ज्वलनुष्टुपावक्ष

(५)

यापसुगनिषगसमिपों॥२०॥ रक्षाणायममरामलक्ष्

श्रीराः॥

मणावयुतः पथिसदैवगछतां॥२०॥ सन्नधः क

३

वचिनरडुगिं पापबाणधरोयुवा॥ गछमन्नोरधो

३

स्माकंरामः पादुकलक्षुमण॥२१॥ रामोदाकार

थिशुरोत्तक्षुमणानुचासेमबकीः काकुत्सपुण

कौशिकीयोरघुतमः॥२२॥ वेदातावेज्ञो घडैपु

राणपुषीतमः॥२३॥ आनानिबलभश्रीमानममे

मपराकृमाः॥२४॥ ईषेगानिजपेनियंमदभक्त

श्रीधयानन्विताः॥ अश्वमेधायुगपुण्यंसंज्ञो

गिनदंज्ञायः॥२५॥ श्रीरामरामरघुनंदन

रघुनेदनरामराम श्रीराम भरवाग्रजरामरामः॥
श्रीराम श्रीरामरण केशरामराम श्रीरामराम दारणंभव
रामराम ॥२५॥ माता रामो म पिता राम चंद्रः स्वामि
(५९) रामो मधुरवः रामचंद्रः ॥ सरवस्यं मे रामचंद्रो द
यायुना निजानेने वज्रान नडाने ॥२६॥ कुजंतं रा
मरामेति मधुरं मधुराक्ष सं ॥ उरलोहिपतिगात्रा
स्वावं देवात्मनी केशो कीलं ॥२७॥ रामाय राम भ
दाय रामचंद्राय वेधके ॥ रघुनाथाय नायसितायाः
पतये नमः ॥२८॥ लोकामिरामं रणरग श्रीरं राजि
वन्म रघुवंशं नाथं ॥ कारुण्यसू पंकसू नाक
रातं श्रीरामचंद्रं दारणं प्रपद्ये ॥२९॥ दक्षिणे

(5)

नक्षत्रमणोयस्य वामतिजनकाक्ष २५०॥ पुरो
तो भास्कराय स्य गं वं देर पुनं दनं ॥ ३० ॥ ज के रक्ष

भरिग ॥ पुं वा राह सूर रक्ष तु वाम नः ॥ अठयान्ना रसि

वचसर्वतः पातु के श वाः २१ ॥ त पहाट् के श ग

ज न पा व लो च नं ॥ व उ त्ता धि क न र च स

दिष्ट सि ह्ने न मो र्म ते ॥ ३२ ॥ ई ति श्री बु ब ध

कौ शी क वि र चि तं श्री रा म क्षा सो स पु णि ॥

ते ने श्री रा म चं दः प्री ॥ से के स १७२ रो द म

स व सै र उ रे ष व ॥ ८ मं द वा रि स म लं य दि तु स

तु भ वं भ व द् र्द स ना म भ यं रं म ट नं ति ति यं

॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com